महादेवी वर्मा के काव्य में संवेदनशीलता

प्रा. डॉ. उत्तम लक्ष्मण थोरात,
आदर्श कॉलेज विटा,

रहस्यवाद और छायावाद की कवयित्रि महादेवी वर्मा जी के काव्य में संसार कें आत्मा- परमात्मा के मिलन - विरह तथा प्रकृति के व्यापारों का चित्रण दृष्टिगोचर होता है। वेदना और पीडा उनकी कविता की महत्वपूर्ण विषेशताएँ रही है।उनके समस्त काव्य में दुःख और निराशावाद क्रंदन है।इस संदर्भ में महादेवी जी लिखती है 'दुःख मेरे निकट जीवन का ऐसा काव्य है, जिसमें सारे संसार को एक सूत्र में बांधने की क्षमता है।' महादेवी जी के काव्य की वेदना लौकिक वेदना से भिन्न अध्यात्मिक जगत की वेदना है। महादेवी जी कहती है "- मुझे दुःख के दोनों ही रूप प्रिय है। एक वह जो मनुष्य के संवेदनशील ह्दय को सारे संसार से एक अविच्छीन्न बंधनों में बांध देता है और दूसरा वह जो काल और सीमा के बंधन में पडे हुए असीम चेतना का क्रंदन है।" [१] वस्तुतः उनके काव्य में दूसरे प्रकार का दुःख अभिव्यक्त हुआ है।

महादेवी जी की 'दीपशिखा ' मानवी मन का प्रतिक है जो प्रतिक्षण और प्रतिपल युग-युग तक जलकर विश्व का तन, मन का दुःख दूर करना चाहती है।उनका 'सांध्यगीत' पीडावाद, निराशावाद और दुःखवाद को भेदनेवाला काव्य है। महादेवी जी की परतंत्र नारी समस्त विश्व को निहारने की क्षमता रखती है। वह 'नीरजा' बनकर जलधाराओं से मनोभूमि को सिंचित कर उसे हरी बना देती है। महादेवी जी मानव को " यामा " की सैर करती हुई एक अलौकिक रहस्यमय जीवन में प्रवेश कर मुक्ति का आनंद देती है। उनका मेरा परिवार सबका बन जाता है और " वसुधैव कुटुम्बकम " की अनुभूति देता है।

" जग पतझर की नीरव रसाल
पहने हिमजल की अश्रुमाल
मै पिक बन गाती डाल -डाल
सुन फूल -फूल उठते पल-पल "

महादेवी जी ने प्रकृति के विविध प्रतीकों के माध्यम से व्यक्ति मन के रूप को स्पष्ट कर जीवन के विविध भावों का चित्रण किया है।

जीवन की क्रिया - प्रतिक्रिया सुखात्मक अथवा दुःखात्मक रूप में व्यक्त होते समय ज्ञान बुध्दि, ह्दय और भावों का संवेदनशीलता समस्त परिवेश के साथ व्यक्त होती है। महादेवी वर्मा जी का काव्य संवेदनशील, सुक्ष्म और अलौकिकता की प्रचिति देता है।इसलिए कवयित्रि की वेदना केवल उनकी नहीं बल्कि सबकी बन जाती है। वेदना और करूणा दोनों भाव मानव ह्दय के महत्वपूर्ण अंग है।महादेवी जी ने वेदना को मानव मन की योगात्मक स्थिति माना है। उनकी वेदना सहजता, व्यापकता, उदारता से परिपूर्ण है। महादेवी जी ने कहा है कि - वेदना अब मधुर लगने लगी है। अपनी वेदना और करूणा प्रकट करते हुए महादेवी जी कहती है-

" बिन मांगे तुमने दे डाला
करूणा का पारावार मुझे।
सुख दुःख के दो पार मुझें "

महादेवी जी ने दुःख और वेदना को मानव जीवन की चिरस्थायी स्थितियां मानी है। मानव जिस दुःख को सहलाता हुआ दुःखी बन जाता है उसे अपना दुःख पहाड जैसा और सुख क्षणिक और छोटा लगता है। कवयित्रि ने सुख से ज्यादा दुःख को महत्व दिया है। दुःख के कारण ही सुख का महत्व बढ चुका है।

महादेवी जी की सहनशीलता भारतीय नारी की तरह अधिक सुकोमल और चिरस्थायी बनी है।उन्होने अपनी वेदना और पीडा को अपनी सहेली माना है। अपने जीवन को अभाव भरे क्षणों को उन्होने उमंग और नवचेतना से भर दिया है।

" यह क्षितीज बना धुंधला विराग
नव अरूण - अरूण मेरा सुहाग
छाया- सी काया वीतराग
सूधि -भी ने स्वप्न रंगिले धन "

महादेवी जी के संध्यागीत की दीपशिखा मर्मस्पर्शी अनुभूति की परिचायक है। उन्हे यह पृथ्वी दुःखो का भाण्डार नही तो सुखों का सागर लगता है। सुख-दुःख मानव जीवन के साथी है। सुख से सभी सुखी होते है मगर दुःख में सुख मानने की मानसीकता दुर्लभ है। संवेदनशील मानव ही सुख और दुःख दोनों से विचलीत नही होते। सुख और दुःख मेघों की छाया जैसा है-

" छाया की ऑख मिचौनी मेघों का मतवालापन
रजनी के श्याम कपोंलो पर, ढरकीले श्रम के कन
फूलों की मीठी चितवन, नभ की यह दीपावलियॉं। "

महादेवी जी ने जीवन की सार्थकता और साधना की अनिवार्यता स्पष्ट की है। कवयित्रि जीवन के कटु सत्य से पलायन न करके उसका हंसते -हंसते मुकाबला करने की कला जानती है। साथ ही महादेवी जी के काव्य में विरह भावना के दर्शन होते है " महोदवी जी की विरह भावना नैसर्गिक है, स्वाभाविक है, सरल है और तरल है। इसमे सतत प्रवाह है और सहज उद्रेक है। " [२] इसीकारण महादेवी जी के काव्य में कृत्रिमता न होकर नैसर्गिक भावोद्रेक के दर्शन होते है।

महादेवी वर्मा जी छायावादी कवियों मे अपना एक विशिष्ट और अलग स्थान रखती है। इसका महत्वपूर्ण कारण है उनका कोमल नारी हृदय होना और संवेदनशीलता। उनकी वेदनानुभूति संकल्पनात्मक अनुभूति की सहज अभिव्यक्ति है। उन्होंने पीडा की महानता के साथ उसका सुखद पक्ष भी स्पष्ट किया है। महादेवी जी का समस्त काव्य संसार अतिव संवेदनशीलता से भरा पडा है। इस संवेदनशीलता के कारण उनका काव्य समस्त जन का काव्य बना है।

संदर्भ :-

१) महादेवी वर्मा - रश्मि
२) डॉ. व्दारिकाप्रसाद सक्सेना - हिंदी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि